गजब कर दिया रामकली ने

पढ़ी-लिखी मैट्रिक पास
तब भी गऊ थी रामकली
मुंह उठाकर नहीं बोलती, सिर नहीं चढ़ती
गुस्सा आता तब भी चुप रहती
उसके आंगन में काई नहीं लगी कभी
शीशे की तरह चमकता है
माटी का घर
गंध से अनुमान लगा लेती स्वाद का
कभी कम या ज़्यादा नहीं हुआ
रसोई में नमक
उसके चेहरे से छलक-छलक जाता प्यार
घर में खुशी हो तो भर आती
उसकी आंख
जागती तो पांव छू लेती
सोने जाती तो सास से पूछ लेती
सबने कहा था—दस घर दुश्मन को मां
बहू मिले ऐसी हो घर-लक्ष्मी
हाय राम!
लीप-पोत दिया, अपना सारा गुण
नाक कटवा दी ससुर की, पति ने मना किया
नहीं मानी, अकेले निकली
और सैकड़ों मर्दों के बीच डाल आई
अपना वोट
खासकर इस गांव में
जहां औरतों ने आज तक वोट नहीं डाला
यह तो गजब कर दिया
रामकली ने

—निलय उपाध्याय